विजयलक्ष्मी बनने के लिए...

एक आदमी खिड़की के पास बैठे-बैठे बोलते जा रहा था, 'तू यहाँ आ, तेरे लिए ये खिड़की खुली रखी है'।

उसके मित्र ने ये बात सुनकर पूछा: 'खिड़की से तो कोई पशु-पक्षी ही आ सकते हैं, आप किसकी राह देख रहे हैं'?

'आप देखते नहीं हो, मेरे हाथ में कलम है, आगे राइटिंग पैड पड़ा हुआ है, फिर भी मैं लिख नहीं सकता। इसलिए प्रेरणा की राह देख रहा हूँ। हवा में कोई प्रेरणा की ऐसी लहर आए जिससे मेरी कलम चालू हो जाए'- उस व्यक्ति ने अपने मित्र को कहा...।

- ब्र. कु. गंगाधर

मित्र उसकी बात पर जोड़ से हँस पड़ा और कहा: 'भले आदमी! प्रेरणा कोई हवा में से उड़कर नहीं आती, या बाज़ार में बिकती नहीं। उसका जन्म स्थान तेरा शांत मन और संवेदनशील हृदय है। मन को एकाग्र कर अपने ध्येय प्रति अंदर से आत्मविश्वास पैदा करेंगे तब प्रेरणा का झरना स्वयं स्फुरित होगा'।

'तो क्या मात-पिता, सद्गुरु, पढ़ाई, ये सब प्रेरक नहीं बन सकते'? - उस व्यक्ति ने पूछा।

'ये सब आपके मन की भूमि को खाद-पानी दे सकते हैं, लेकिन कोई भी कार्य करने का आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प तो आपको ही करना पड़े' -मित्र ने कहा।

हमारे पास मन है, लेकिन मन में अवकाश नहीं। चित्त है, लेकिन चिंतन करने के लिए समय नहीं। हृदय है, लेकिन उसकी बात सुनने की फुर्सत नहीं। हम लक्ष्य हीन प्रवासी की तरह नाव को चलाते हैं और थक जाते हैं, तो वापिस मोड़कर आ जाते हैं।

प्रेरणा की प्रतीक्षा के बदले अंदर के एक शब्द, एक वाक्य के उद्गम को झेल लो। उस व्यक्ति को वो बात समझ लेनी चाहिए कि होल सेल में प्रेरणा का प्रवाह कभी भी बहकर अपने पास नहीं आता। एक छोटा सा विचार मन में स्फुरित हुआ और उसे पकड़कर काम शुरु कर देना, यही एक विकल्प है। कार्य करने के पहले ये कठिन या सहज, ऐसे दो छोर के बीच हम अटक जाते हैं। कठिन लगते कार्य को छोड़ सहज अपना लेने की जल्दबाज़ी करते हैं, परिणामस्वरूप छिछरे किनारे से वापिस आ जाते हैं। प्रेरणा का उद्गम स्थान बुद्धि नहीं अंत:करण है, प्रमाद नहीं पुरुषार्थ है, बहानेबाज़ी नहीं पराक्रम है।

मनुष्य अनेक क्षेत्र में सफलता तथा प्राप्ति के लिए प्रेरणा का भूखा रहता है, जैसे कि धन, मान-सम्मान, यश, पुण्य, भयमुक्ति, मन-शुद्धि और आनंद आदि आदि। **प्रेरणा की प्राप्ति भी एक तपस्या है, और प्रत्येक तपस्या दृढ़ संकल्प मांगती है। जीवन को अगर उत्सव मानें तो जीवन एक वरदान है और दु:खों की गठरी मानें तो ये एक अभिशाप है।**

'विकास के नियम' में सरश्री ने एक मुद्दे की बात कही है, 'प्रत्येक एक छोटा सा कार्य सफलता की दिशा में आगे बढ़ने का एक छोटा सा कदम है, इसलिए छोटे-छोटे कार्यों के प्रति अपनी अरुचि नहीं दिखानी चाहिए। अपने हरेक कार्य में रुचि को ले आइए। अपने प्रत्येक कर्म को प्राप्त करने के लिए अपने लक्ष्य के साथ जोड़ने की योजना बनाइये।

प्रेरणा, ये तो एक गंगा है, उसको झेलने के लिए शंकर बनना पड़े। भागीरथ बनें, तब ही सफलता के भागीरथी को वास्तविकता की धरती पर अवतरित करा सकते हैं।

सार रूप में यही कह सकते हैं कि जब हम खुद ही खुद को कोई लक्ष्य की प्रतीति करा देते हैं तो कार्य कठिन नहीं, अपितु अत्यंत सहज होता है। तब अपने आप ही कार्य के लिए प्रेरणा जागृत होने का अनुभव होता है।

जीवन में विजयलक्षी प्रेरणा प्राप्त करने के लिए - शेष पेज 8 पर

हम सब कितने खुशनसीब हैं जो बाबा के इतने करीब हैं

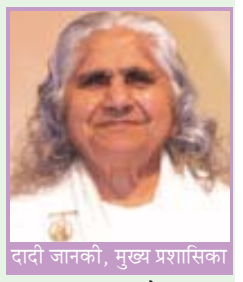
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

वो दिन भी कितने प्यारे... अभी यह दिन भी कितने प्यारे हैं... अभी हमारा कितना भाग्य है। वो कौनसे दिन थे? जब शिवबाबा ब्रह्मा तन में हमारे साथ थे। अभी भी अच्छी तरह से ब्रह्माबाबा को देखो तो वो हमारे साथ है। अच्छा लगता है, उसने हमको अपना कम्पैनियन बना दिया है। एक बुक भी है कम्पैनियन ऑफ गॉड। भगवान को अपना कम्पैनियन बनाना यानी भगवान ने आपेही अपना बनाया या मैंने उसको अपना बनाया, क्योंकि वो ऐसे ही नहीं बनता है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी होता है। हिम्मते बच्चे मददे बाबा। डायमण्ड हॉल में देखो इतने बड़े संगठन का जो वायुमण्डल है इसमें सबसे मिलना, सारे दिन में यह जो शाम का टाइम है, क्या फीलिंग है! बाबा साथ हमारे हैं। हम तो बाबा के साथ रहने के लिये बाबा को याद करते हैं और ऐसे सबसे मिलने में तो और भी बहुत अच्छा लगता है, खुशी होती है। बाबा कहते बच्चे, बच्चे कहते बाबा यह दिन अति प्यारे, सारे कल्प में ये दिन कितने प्यारे हैं जब बाबा साथ हमारे हैं। यह गीत भी इतना अच्छा बनाया है।

बाबा देखता है बच्चे श्वांसों श्वांस बाप की याद में हैं ना, और कोई संकल्प तो नहीं चलता है ना! क्योंकि यह नुमाशाम का समय ऐसा है, और मुझे ज़्यादा इस बात की खुशी है कि मुरली को सुनते रहो, पढ़ते रहो यह हमारी जीवन यात्रा में बाबा ने पालना पढ़ाई बहुत अच्छी दी है। बाबा ने मुझे कहा था कि नोट्स नहीं लो, सुनती जाओ, समाती जाओ। वो दिन आज का दिन बाबा के महावाक्य सुनते जाओ, अन्दर समाते जाओ माना जीवन यात्रा में इसका उपयोग (अमल) करके सफल करो। यात्रा पर जाते हैं तो सारा अटेन्शन रहता कि कहाँ जा रहे हैं। जगन्नाथ पुरी जा रहे हैं या श्रीनाथ द्वारे जा रहे हैं, कहाँ जा रहे हैं। अभी बाबा हमारे साथ है ना तो कहाँ जाना है वो जानें, हम तो बाबा के साथ रहते हैं। ठीक है ना। बाबा हमारे साथ है, बड़ा सहजयोग है। राजयोग फिर कर्मयोग भी है। जो बाबा नियम बनाके देता है, हमारी दादी ने बहुत प्रैक्टिकल चलके कितनी वृद्धि की है। 69 में बाबा अव्यक्त हुए फिर क्या हुआ? तो बाबा के सामने जब बैठती हूँ, बाबा आप अव्यक्त होकर के भी इतनी सेवा कर रहे हो, हम क्या करें? तो विकर्माजीत, कर्मातीत और अव्यक्त स्थिति में रहना है। बाबा को देख कॉपी करते हैं ना। हम कितने खुशनसीब हैं जो बाबा के इतने करीब हैं, इसलिए निर्भय हैं, निर्वैर हैं। किसी को कोई भय है क्या? इतनी अच्छी स्थिति है, शान्ति में रहने से वायुमण्डल इतना अच्छा शक्तिशाली बन जाता है। मुझको अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया, मुश्किल बात भले आवे पर मुस्करायेंगे। कोई कहे यह बात मुश्किल है, मुश्किल नहीं है क्योंकि बाबा साथ हमारे है। यह गीत की लाइन हमको कितना एलर्ट बना देती है। क्या करें, कैसे करें यह काँ काँ का आवाज़ न हो।

हमारा आपस में जो सम्बन्ध हैं ना, मेल फीमेल सब कहेंगे हम आत्मा हैं। तो आत्मा की दृष्टि देही अभिमानी स्थिति बना देती है। फिर देह-अभिमान का नाम-निशान नहीं रहता। सारा दिन पाँव धरती पर नहीं है। बाबा ने एक बारी कहा था बच्चे तुम्हारे कदम कदम में पदमों की कमाई है, पदम कौनसा है? कौन है जिनके पास कुछ भी बैंक बैलेंस नहीं है? मैंने कभी सोचा ही नहीं है कि मुझे बैंक में रखना है, क्या करेंगी? कुछ नहीं चाहिए। जहाँ मेरा तन है, वहाँ मेरा मन है। तो मन को ऐसी सुत्ती घोटके बाबा ने पिलाई है जो मन शान्त है। मनमनाभव से अपने आप मध्याजीभव हो जाता है। मामेकम् माना एक बाबा को याद करते नहीं हैं पर याद रहती है। और कोई याद नहीं आता है इसलिए फ्री हैं। मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई, बस। तो जब शरीर में हैं तो यह धुन लगी हुई है मेरा तो एक दूसरा... शरीर छोड़ेंगे तो भी गैरंटी है दिखाई पड़ेगा मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। इस स्मृति में रहना, एक दो को उसी दृष्टि से मिलना बहुत अच्छा लगता है। डायमण्ड हॉल में सभी सच्चे डायमण्ड लगते हैं। सब सच्चे हीरे हो ना! जीवन हीरे मिसल बाबा ने बनाई है उसको कौड़ियों के पीछे गँवाना नहीं है। हम क्या जानें, सफेद कपड़ा खीसा खाली... नशा चढ़ा हुआ है।

जिसका मन पर राज्य, वही राज्य-भाग्य का अधिकारी

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा कहता है पुरुषार्थ करके सम्पूर्ण बनना है, तो उसके लिए मेरे को अपने दिल में रख दो। बस। बाबा हमारे दिल में है, माना सदा साथ है तो हम अकेले नहीं हैं। बाबा बुद्धि में याद है माना जब बाबा साथ है तो बाबा की आज्ञा मानना सहज हो जायेगा। बाबा का काम है कहना, हमारा काम है करना, इसलिए कोई भी पुरुषार्थ करने में मुश्किल नहीं लगती, क्योंकि दिलाराम मेरे दिल में साथ में है, हम अकेले नहीं हैं। जैसे हमारे को बाबा इतना प्यारा है, ऐसे ही हमें दुनिया वालों को बताना है कि मेरा बाबा क्या है! जब दुनिया में प्रत्यक्ष हो जाएगा हमारा बाबा आ गया, तो यह दुनिया ही बदल जायेगी, जहाँ दु:ख और अशान्ति का नाम ही नहीं होगा। बाबा अभी यही चाहता है कि एक-एक बच्चा मेरे समान बन जाये, जो सब देख करके खुश हो जाएं। इसके लिए ऐसा पुरुषार्थ करना है जो कोई भी हमारी सूरत को देखे तो हमारी सूरत में बाबा उनको नज़र आवे। इसके लिए बच्चा बनके बाप को याद करने का पुरुषार्थ करो, बाप से जो वर्षा मिला है वो लो तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे। मैं कौन और आप कौन? इस पहचान से हमारे कर्म और हमारे चलन से यह दिखाई दे कि यह किसके बच्चे हैं? क्योंकि जिसको भगवान मिल गया उसको और क्या रह जाता है! अरे, भगवान हमारा हो गया और चाहिए क्या! भगवान के बच्चे, तो जो बाप का कर्म धर्म वो हमारा होना चाहिए।

ब्रह्मा बाबा फरिश्ता बना ना इसी दुनिया में यहाँ रहते भी। ब्रह्मा बाबा से हमारा बहुत प्यार है, ब्रह्मा बाबा कहने से ही खुशी की खुराक मिल जाती है। तो बी.के. हैं माना सदा खुश। मुरली के मनन से मन को कंट्रोल में रखो यानि मन और तरफ न जाये, बाबा और बाबा की बातों की तरफ ही बुद्धि जाये तो सहजयोगी बन जायेंगे। इसके सिवाय और कहीं यहाँ-वहाँ बुद्धि नहीं जाये तब दिल से निकलेगा मेरा बाबा। तो जब बाबा और मैं...बस, तो सोचो कितनी कमाई होगी। जिसका मन पर राज्य होगा, वही राज्य कर सकता है। तो जब तक जीना है तब तक खुश रहना है। यह वायदा हो कि जब तक ज़िन्दा हैं तब तक खुश रहेंगे, खुशी बांटेंगे। इसके लिए बाबा को एक सेकण्ड भी अलग नहीं करो। चित्र में देखा ब्रह्मा बाबा कितना मुस्करा रहे हैं, तो सभी ऐसे खुश हैं? यह खुशी कब तक रहेगी? सबका दु:ख दूर हो गया? तो सभी अपने आपको चेक करना, अपने आप ही अपने दिल से पूछते रहना और अपना रिकॉर्ड खुद ही रखना कि आज का दिन खुशनुमा रहा? इसके लिए जो भी खराबी हो ना वो दिल से बाबा को दे दो तो खराबी की जगह दिल खुशी से भर जायेगा।

कई कहते हैं योग लगाना मुश्किल है, बुद्धि टिकती नहीं है, मन चंचल है, पता नहीं कहाँ-कहाँ घूमके आता है...। लेकिन बाबा को प्यार से याद करो बस, फिर मन कहाँ जा नहीं सकता, और प्यार सीखने में, प्यार करने में कोई मुश्किल नहीं है, क्योंकि जहाँ प्राप्ति को सामने रखेंगे वहाँ प्यार अवश्य पैदा होगा।

आप अपनी एक दिन की दिनचर्या देखो तो सारे दिन में दिल से आप जो याद करते हो, वह किसको याद करते हो? यह चेक करो। जिससे आपको प्राप्ति है, प्यार है, उसी को याद करते होंगे। चाहे कोई वस्तु को याद करते हो, चाहे कोई व्यक्ति को याद करते हो, जहाँ आपको प्राप्ति है। प्राप्ति सामने आती है तो याद आती है, और जहाँ प्राप्ति होती है वहाँ प्यार ऑटोमेटिक होता है। तो पहले यह चेक करो कि बाबा से मेरा जिगरी दिल का प्यार है? बाबा कहते हैं- एक मेरे बच्चे हैं 'दिमाग वाले' और दूसरे बच्चे हैं 'दिल वाले'। दिल से जानकर, मानकर, प्यार से उसपर चलना ही सत्यता है।